Philosophy

Pr BASHMAT 2 BA I SEM

वैशेषिक का सामान्य पदार्थ (Vaiseshika Category of Samanya)

वैशेषिक दर्शन में सामान्य का अस्तित्व स्वतंत्र रूप से माना गया है। वैशेषिक का सामान्य सिद्धान्त का भी अपना महत्व है। सामान्य की अनुभूति वस्तुओं में समान धर्मों के आधार पर होती है, जैसे - राम, श्याम, बलराम आदि में मनुष्यत्व धर्म का होना। इसी प्रकार गाय, घोड़ा, बकरी आदि में पशुत्व धर्म होता है, राम, श्याम आदि में गाय, घोड़ा आदि में पशुत्व धर्म नहीं मिलते हैं, तो यही कहते हैं कि सामान्य केवल एक ही प्रकार का होता है।

सामान्य के दो भेद हैं - पर सामान्य एवं अपर सामान्य।

(i) नामवाद (Nominalism) - नामवाद का सामान्य सम्बन्धित दर्शन में बौद्ध दर्शन है। बौद्ध दर्शन के अनुसार सामान्य केवल नाममात्र है। वास्तविक जगत में दुनिया की प्रत्येक एक-दूसरे से अलग व्यक्तियों को एक ही नाम से पुकारते हैं, बौद्ध मानते हैं। इसके अतिरिक्त सामान्य की कोई सत्ता नहीं है।

बौद्ध दर्शन मानते हैं कि सामान्य सिद्धान्त की अवधारणा केवल शब्दों के सामान्य गुण दिखाते हैं। जैसे गाय, घोड़ा आदि के अलग-अलग नाम, कुछ अलग हैं सामान्य नहीं होते हैं। इसे नाम के द्वारा ही पुकारा जाता है। इसी प्रकार की प्रतीति एवं अभिव्यक्ति को ही सामान्य के अस्तित्व में माना जाता है।

(ii) प्रत्ययवाद (Conceptualism) - प्रत्ययवाद के प्रतिपादक जैन दार्शनिक अद्वैतवेदान्त का अनुसरण करते हैं। व्यक्तियों में सामान्य की अवधारणा सिर्फ मानसिक है। सामान्य व्यक्तियों का आवश्यकतानुसार आधारित गुण है। किसी वस्तु में समानता है। अद्वैतवादी अनेक व्यक्तियों को मानते हुए भी प्रत्ययवाद की स्थापना करते हैं तथा इसे सामान्य के किसी अस्तित्व के बजाय मानसिक संकल्पना के रूप में देखते हैं।

(iii) वास्तववाद (Realism) - वास्तववाद के प्रतिपादक न्याय-वैशेषिक सामान्य का अस्तित्व स्वतंत्र मानते हैं। सामान्य नित्य पदार्थ है। सामान्य नित्य पदार्थ है, व्यक्ति विशेष नश्वर हैं परन्तु उनका सामान्य नित्य एवं अमर है। किसी सामान्य की उत्पत्ति नहीं होती, व्यक्ति का अस्तित्व, पशुत्व आदि सामान्य है। न्याय-वैशेषिक में सामान्य की परिभाषा इस प्रकार दिया गया है।

"नित्यमेकमनेकानुगतं सामान्यम्" अर्थात् सामान्य नित्य एवं अनेक वस्तुओं में समानरूप से है।

उपर्युक्त परिभाषा के विश्लेषण से सामान्य की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं।

(i) सामान्य नित्य है। किसी व्यक्ति के व्यक्ति विशेष नश्वर है परन्तु सामान्य नित्य अमर है।

(ii) सामान्य अनेक वस्तुओं में या व्यक्तियों में समवेत है। जैसे - मनुष्यत्व सभी मनुष्यों में पाया जाता है। 'सामान्यं नित्यमेकमनेकमनुगतम्'।

(iii) सामान्य का सामान्य नहीं होता। जैसे मनुष्यत्व सामान्य का सामान्य नहीं है। वैशेषिक के अनुसार सामान्य द्रव्य, गुण, कर्म में समवेत रहता है क्योंकि वे द्रव्यत्व (Substantiality) गुण, कर्म में समवेत सामान्य वैशेषिक मानते हैं क्योंकि वे

अनेकान्त सामान्य वैशिष्ट्य का कभी कभी का सामान्य है,

सामान्य अनन्तानन्त पदार्थों में मिलता है, जैसे घट, पटादि, आत्मा आदि में मिलता है। सामान्य का स्वरूप तीनों कालों में एक समान (same) रहता है। पातञ्जल सिद्धान्त के अनुसार सामान्य का अस्तित्व (existence) नहीं होता परन्तु subsistence होता है।

सामान्य का सामान्य नहीं होता। यदि सामान्य का सामान्य माना जाय तो एक सामान्य दूसरे सामान्य और दूसरे से तीसरे सामान्य माना पड़ेगा। इस प्रकार का अनवस्था दोष उत्पन्न हो सकता है। इस दोष के कारण सामान्य के सामान्य की सत्ता स्वीकार नहीं की जा सकती है।

जैन वैशेषिक के मतानुसार सामान्य का लक्षण सामान्यवान प्रत्येक के द्वारा संयुक्त होकर ~~समवाय~~ समवाय का प्रत्येक में बिना किसी अपेक्षा के समवाय देते रहा जा सकता है।

वैशेषिक-दर्शन में सामान्य के तीन प्रकार माने गये हैं,

(i) पर सामान्य - जो सामान्य अत्यधिक व्यापक होने के कारण (Being-hood)

(ii) अपर सामान्य - सबसे छोटे सामान्य को अपर सामान्य कहा गया है, जैसे गौत्व, मनुष्यत्व, घटत्व इत्यादि। गौत्व केवल गौओं में, मनुष्यत्व केवल मनुष्यों में तथा घटत्व के घड़ों में पाया जाता है।

(iii) परापर सामान्य - पर सामान्य तथा अपर सामान्य के बीच आने वाले सभी सामान्य परापर सामान्य कहलाते हैं जैसे - द्रव्यत्व। द्रव्य सामान्य की अपेक्षा कम व्यापक है किन्तु गौत्व, मनुष्यत्व की अपेक्षा ~~कम है~~, अधिक व्यापक है।

सामान्य और विशेष में अन्तर निम्न हैं,

दोनों ही वैशेषिक दर्शन में स्वतंत्र पदार्थ माने गये हैं परन्तु दोनों में कुछ अन्तर भी है,

(i) सामान्य ~~अनेक~~ अनेकों में रहता है विशेष व्यक्तिगत अनेकता पाया जाता है,

(ii) सामान्य नित्य होता है किन्तु विशेष में अनित्यता,

(iii) सामान्य अनेकों में समवाय का प्रतीक है जबकि विशेष नित्य संबंध का।